**भगत कबीर – सबद ४०**

**अब मो कउ भए राजा राम सहाई ॥**

**रागु गउड़ी भी सोरठि भी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३३१**

अब मो कउ भए राजा राम सहाई ॥
जनम मरन कटि परम गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥
साधू संगति दीओ रलाइ ॥
पंच दूत ते लीओ छडाइ ॥
अंमृत नामु जपउ जपु रसना ॥
अमोल दासु करि लीनो अपना ॥१॥
सतिगुर कीनो परउपकारु ॥
काढि लीन सागर संसार ॥
चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥
गोबिंदु बसै निता नित चीत ॥२॥
माइआ तपति बुझिआ अंगिआरु ॥
मनि संतोखु नामु आधारु ॥
जलि थलि पूरि रहे प्रभ सुआमी ॥
जत पेखउ तत अंतरजामी ॥३॥
अपनी भगति आप ही दृड़ाई ॥
पूरब लिखतु मिलिआ मेरे भाई ॥
जिसु कृपा करे तिसु पूरन साज ॥
कबीर को सुआमी गरीब निवाज ॥४॥४०॥

**सार:** आंतरिक विश्वास वह अवस्था है जिसमें जागरूकता बदलती परिस्थितियों में निश्चितता खोजना बंद कर देती है और स्वयं के अस्तित्व की गहराई में टिकना शुरू कर देती है। जैसे-जैसे अमृत जैसा चिंतन सोच, वाणी और नज़रिए को आकार देता है, मन का बेचैन आंतरिक संवाद धीरे-धीरे अपनी

पकड़ खोने लगता है। डर, तुलना और तसल्ली पाने की आवश्यकता की जगह, शांत भीतरी सामंजस्य ले लेता है। जब चेतना अनिश्चितता से कहीं अधिक गहरी उस आधारभूमि को पहचान लेती है जो उसे निरंतर सहारा देती है तब शांति उत्पन्न होती है। जो कभी सहारे की एक चिंतित खोज थी, वह इस आत्मीय अनुभूति में बदल जाती है कि स्थिरता का स्रोत सदैव हमारे भीतर ही विद्यमान था।

अब मो कउ भए राजा राम सहाई ॥
अब वह सर्वव्यापी परम सत्य ही मेरा मुख्य आधार बन गया है। यह उस आंतरिक विश्वास को दर्शाता है जहाँ चेतना बाहरी आश्वासनों पर निर्भर रहना छोड़कर, उस आंतरिक गहराई में टिक जाती है जो जीवन को निरंतर सहारा देती है।

जनम मरन कटि परम गति पाई ॥१॥ रहाउ ॥
जन्म और मृत्यु के भय पर विजय पाकर, मनुष्य चेतना की उच्च अवस्था तक पहुँच सकता है। यह बल देता है कि असुरक्षा पैदा करने वाले डर, संदेह और अनिश्चितताओं को छोड़ने से हमारे अनुभव बेहतर हो सकते हैं और हमारी सोच अधिक जागरूक बन सकती है। (१)(विराम)

साधू संगति दीओ रलाइ ॥
जब मैं भीतर से जागृत संतों की संगति में शामिल हुआ। यह बताता है कि बदलाव की शुरुआत सत्य, अंतर्दृष्टि और चिंतनशील समझ की निरंतर उपस्थिति से होती है।

पंच दूत ते लीओ छडाइ ॥
मैं पाँच शत्रुओं से मुक्त हो गया। यह आंतरिक शुद्धि को दर्शाता है, जहाँ ज्ञान की संगति से अंतरात्मा परिपक्व होती है और पाँच आंतरिक शत्रुओं- अनियंत्रित इच्छाओं, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार, पर अपनी पकड़ ढीली कर देती है।

अंमृत नामु जपउ जपु रसना ॥

अमृत जैसा चिंतन हमारी बातों में हमेशा बसा रहे। यह हमारी आंतरिक सोच में बदलाव को दिखाता है जहाँ मन का बेचैन स्वयं से चलते रहने वाला संवाद, धीरे-धीरे शांति में बदल जाता है।

अमोल दासु करि लीनो अपना ॥१॥

मैंने उसे अपना अमूल्य सेवक बना लिया। यह उस सोच को दर्शाता है जिसने आत्म-चिंतन को जागरूकता बनाए रखने में निरंतर सहायक के तौर पर अपनाया है। (१)

सतिगुर कीनो परउपकारु ॥

सत्यपूर्ण अंतर्दृष्टि ने महान उपकार किया है। यह उजागर करता है कि ज्ञान को जीवन में अपनाने से आंतरिक स्पष्टता आती है जो हमारे समग्र कल्याण को पोषित करती है।

काढि लीन सागर संसार ॥

मुझे मायावी दुनिया के सागर से बाहर निकाल लिया गया। यह द्वैत से मुक्ति का प्रतीक है जहाँ चिंतन मन में ऐसी जगह बनाता है जो हमें अपनी सीमाओं से ऊपर उठने की शक्ति देता है।

चरन कमल सिउ लागी प्रीति ॥

मन की गहराई में मौजूद पवित्रता के प्रति सच्चा प्रेम जाग उठा है। यह आंतरिक परिवर्तन की ओर इशारा करता है जहाँ ध्यान सच्चाई, स्पष्टता और गुणों की सराहना पर केंद्रित होता है।

गोबिंदु बसै निता नित चीत ॥२॥

गोबिंद, जो हर जगह मौजूद सच्चाई है, हमेशा हमारी चेतना में बसे रहते हैं। यह बताता है कि ज्ञान और मन की स्थिरता के प्रति निरंतर प्रेम से, जागरूकता स्वाभाविक रूप से उस सर्वव्यापी सत्य में टिक जाती है जो पूरी दुनिया में व्याप्त है। (२)

माइआ तपति बुझिआ अंगिआरु ॥
मायावी इच्छाओं का जलता हुआ अंगारा बुझ गया है। यह खोखली लालसाओं की हमारी निरंतर खोज के अंत का प्रतीक है जिसने कभी हमें अभिभूत कर दिया था, जिससे हमें गहन आध्यात्मिक सत्य को स्वीकार करने के लिए सक्षमता मिली।

मनि संतोखु नामु आधारु ॥
संतोष मन में बस गया है, चिंतन ही सहारा है। यह आत्मनिर्भरता को दर्शाता है जहां ध्यान भटक कर या बेचैन होकर बाहर पूर्णता की तलाश करता नहीं है क्योंकि इसका ध्यान भीतर स्थित रहने वाले सत्य पर केंद्रित हो गया है।

जलि थलि पूरि रहे प्रभ सुआमी ॥
जल और थल में, संप्रभु सर्वव्यापी उपस्थिति हर चीज़ में व्याप्त है। यह एक सर्वेश्वरवादी दृष्टिकोण को दर्शाता है जहां आंतरिक शांति हर तत्व के माध्यम से समान जीवित उपस्थिति को पहचानती है।

जत पेखउ तत अंतरजामी ॥३॥
जहाँ भी मैं देखता हूँ, वहाँ अन्तर्यामी चेतना है। यह जागरूकता अलगाव को दूर करती है और हमें सभी रूपों के सार को समझने की अनुमति देती है जो हमें बाहरी निर्णय से परे जोड़ती है। (३)

अपनी भगति आप ही दृड़ाई ॥
भक्ति स्वयं अपने भीतर से स्थिर होती है। इससे पता चलता है कि आंतरिक बदलाव जबरन नहीं लाया जा सकता बल्कि यह हमारी अंतरात्मा में पहले से स्थित गहन सत्य से पैदा होता और बना रहता है।

पूरब लिखतु मिलिआ मेरे भाई ॥
हे भाई, जो पहले से तय था, वह अब मिल गया है। इससे पता चलता है कि आंतरिक स्पष्टता भाग्य की बात नहीं है, इसे समर्पण और इरादे से विकसित किया जाता है।

जिसु कृपा करे तिसु पूरन साज ॥
जिसे आंतरिक कृपा मिलती है, वह पूर्णता प्राप्त कर लेता है। इसका अर्थ है कि कृपा कोई दूर का इनाम नहीं है बल्कि इसमें ग्रहणशीलता, समझ, स्थिरता और अपनी पूर्णता की ओर आंतरिक तालमेल शामिल है।

कबीर को सुआमी गरीब निवाज ॥४॥४०॥
कबीर कहते हैं कि उनके स्वामी सर्वव्यापी चेतना हैं, जो विनम्रता को महत्त्व देती हैं। यह प्रकृति के नियमों को दर्शाता है जहाँ ब्रह्मांडीय ऊर्जा अहं और द्वैत से ख़ाली जगह में, अधिक आसानी से बहती है। (४)(४०)

**तत्त्व:** भगत कबीर महत्त्वपूर्ण सत्य बताते हैं जिसे अकसर अनदेखा कर दिया जाता है, जीवन की सही समझ विनम्रता से आती है जो अंतरात्मा को पोषित करती है। हालाँकि सामाजिक प्रतिष्ठा और ताक़त लोगों को प्रभावित कर सकते हैं लेकिन वह असली स्थिरता नहीं देते। सीखने की तत्परता, दया और सत्य को अपनाने से हम अहंकार के बोझ से मुक्त हो जाते हैं। इस खुलेपन में ऐसी शक्ति होती है जो दूसरों पर हावी नहीं होती, ऐसी गरिमा जो तुलना से परे है और ऐसी शांति जो किसी की मंज़ूरी पर निर्भर नहीं करती। जिसे अहं कमज़ोरी समझता है, वही ज्ञान और वास्तविक आंतरिक दृढ़ता का आधार बनता है।

---

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
**Oneness In Diversity Research Foundation**
**वेबसाइट:** OnenessInDiversity.com
**ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com**